ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11,S.Iss 06, 2022

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए समायोजन की उपयोगिता

ओरुषि सक्सैना
शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र)
आई.आई.एम.टी. यूनिवर्सिटी, मेरठ।

डॉ. सरिता गोस्वामी
शोध निर्देशिका (शिक्षाशास्त्र)
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्षा
आई.आई.एम.टी. यूनिवर्सिटी, मेरठ।

शोध सार -

बालक के सर्वांगीण विकास के लिए उसका शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ होना अत्यंत आवश्यक है। जन्म के समय बालक अपने मूल प्रवृतियों से प्रेरित होकर कार्य करता है क्रमशः शिक्षा के द्वारा बालक की इन मूल प्रवृत्तियों का शोधन होना प्रारंभ होता है। बालक की प्रथम पाठशाला परिवार तथा प्रथम शिक्षिका माता होती है तत्पश्चात विद्यालय में गुरु बालक के संपूर्ण व्यक्तित्व को विकसित, व्यवस्थित तथा विविध जीवन कौशल ने समायोजन करना सिखाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में शोधकर्जी ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए समायोजन उपयोगिता पर अपने विचार व्यक्त किए है।

मूल शब्द - समायोजन माध्यमिक स्तर, समायोजन की उपयोगिता।

प्रस्तावना -

जन्म के समय बालक असामाजिक एवं असहाय होता है। उसकी न कोई संस्कृति होती है, न कोई आदर्श होते हैं किंतु जैसे जैसे बालक बड़ा होता है, वैसे-वैसे वह सामाजिक प्राणी बनता जाता है। बालक को सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानव बनाने में शिक्षा की अत्यन्त महत्व भूमिका होती है क्योंकि शिक्षा व्यक्ति की नैसर्गिक प्रवृत्तियों का शोधन और मार्गान्तरीकरण करके उसे समाज का एक सक्रिय सदस्य बनाती है जिससे वह अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन कुशलतापूर्वक कर सके। मानव जीवन एवं मानव विकास में शिक्षा का कितना महत्व है इस संदर्भ में सुप्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री जॉन लॉक का वक्तव्य सत्य प्रतीत होता है-

"जिस प्रकार पौधों का विकास खेती की जुताई से होता है उसी प्रकार मनुष्य का विकास शिक्षा के द्वारा होता है।"

शिक्षा वह है जो बालक को पशु तुल्य से मनुष्य बनाती है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति पहने जाने वाले परिधान के साथ साथ वह उठने बैठने, चलने फिरने और सामाजिक तौर तरीकों को सीखता रहता है। शिक्षा के द्वारा ही बालक अपनी आवश्यकता एवं वातावरण के मध्य सामंजस्य स्थापित कर पाता है। समायोजन की प्रक्रिया में व्यक्ति तथा

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11,S.Iss 06, 2022

वातावरण दोनों ही प्रभावित होते है। समायोजन की प्रक्रिया में बालक अपने बाहरी वातावरण के साथ अनवरत अंता क्रिया करता है। समायोजन के अभाव में वह द्वंद, तनाव व बेचैनी को अनुभव करता है।

साहित्यक समीक्षा –

प्रस्तुत अध्ययन की सहायता के लिये शोधकर्ती ने शोध समस्या से सम्बन्धित साहित्य "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए समायोजन की उपयोगिता" पर अध्ययन विस्तार से किया हैं। विद्यार्थियों के समायोजन से सम्बंधित देश व विदेशों में हुये अध्ययन से जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं उनको निम्नलिखित रूप में व्यक्त किया जा सकता हैं –

समायोजन से सम्बंधित अध्ययन :-

सैन्डेपर एवं बी (Sandrpar and Bigge 1960)' ने किशोरों की समस्याओं व्यवहार एवं समायोजन के सम्बन्ध में अध्ययन किया. जिसके अन्तर्गत यह पाया गया कि किशारों की अपनी और सामाजिक समस्याएँ उनके विद्यालयी एवं सामाजिक जीवन को प्रभावित करती है। जिसके फलस्वरूप उनके समायोजन में बाधा आती है।

वैने सेवज' (1968) के अनुसार स्वास्थ्य, शारीरिक बनावट और शारीरिक क्षमता एवं सामाजिक ग्राह्यता का समायोजन से सीधा सम्बन्ध है।

वार्टन एवं कैटल' (1972) ने समायोजन एवं अस्वस्थता का अध्ययन करते हुये यह निष्कर्ष निकाला है कि जो व्यक्ति अधिक दिनों तक बीमार रहे ये सामान्य लोगों की तुलना में चिन्ता से ग्रस्त पाये गये। वह असमायोजित पाये गये।

दक्षिणी कैरोलीना के हैरीसन विलियम (1976) ने विश्वविद्यालयी छात्रों के समायोजन पर अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि एक ही पारिवारिक वातावरण के छात्रों एवं छात्राओं के समायोजन में विद्यालयी वातावरण का कोई विशेष असर नहीं पड़ता है।

वर्जिनिया विश्वविद्यालय के सपाल किन्टो (1977) ने परिवार, विद्यालय समाज एवं समुदाय को दृष्टि में रखते हुए छात्रों के समायोजन पर अध्ययन किया तथा निष्कर्ष में पाया कि जहाँ पर छात्रों का पारिवारिक समायोजन अच्छा रहता है वहाँ पर कक्षाओं में भी समायोजन की समस्या नहीं रहती तथा छात्रों में उद्देश्य, अनादर की भावना तथा प्रतिरोधात्मक रूप नहीं रहता। अध्यापको के भी विचार से पारिवारिक समायोजन तथा विद्यालयी समायोजन में विशेष सम्बन्ध है। इन्होंने यह भी निष्कर्ष निकाला कि विद्यालयी समायोजन के लिए पारिवारिक समायोजन आवश्यक है।

कुमार एंव श्रीवास्तव (2007) ने 'स्कूल से सेवानिवृत अध्यापिकाओं एवं घरेलू महिलाओं के बच्चों में समायोजन के स्तर का अध्ययन किया, निष्कर्ष में पाया गया, कि सेवानिवृत अध्यापिकाओं के बच्चे, गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों की अपेक्षा अधिक समायोजित थे।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11,S.Iss 06, 2022

Pesu, et al., (2017) द्वारा अभिभावकों के विश्वास एवं बच्चों के आत्म जागरूकता के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन किया गया। निष्कर्ष में पाया कि जो अभिभावक अपने बच्चों के साथ विश्वासपूर्ण होते हैं वह जल्दी समायोजन कर पाते है।

समायोजन –

समायोजन का शाब्दिक अर्थ होता है अच्छी तरह या समान रूप से व्यवस्था करना। समायोजन सुव्यवस्थित ढंग से परिस्थितियों से अनुकूलन करने की प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति की आवश्यकता की पूर्ति होती है तथा मानसिक द्वन्द उत्पन्न नहीं होता है व्यक्ति जब अपने लक्ष्य की प्राप्ति आसानी से कर लेता है तो वह सन्तोष का अनुभव करता है परन्तु यदि उसे अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है और फिर भी लक्ष्य की प्राप्ति नही हो पाती है तो उसमें कुंठा, असन्तोष, निराशा या भग्नाशा उत्पन्न हो जाती है। इसी प्रकार जब व्यक्ति अपनी इच्छाओं और रूचियों के प्रतिकूल भाक्तियों का सामना करता है तो उसमें मानसिक तनाव उत्पन्न हो जाता है फलतः व्यक्ति के मन में उथल पुथल मच जाती है जिसे समाप्त करने के लिये वह बाधाओ को दूर करने का प्रयास करता है। उसका प्रयास यदि बाधाओं को दूर करने में सफल रहता है तथा सृजनात्मक और परिस्थितियों के अनुकूल होता है तो वह वातावरण के साथ समायोजन कर लेता है। यदि व्यक्ति बाधाओं को दूर करने में असमर्थ रहता है तथा अवांछनीय मार्ग अपना लेता है तो कुसमायोजन उत्पन्न हो जाता है समायोजन की यह प्रक्रिया जीवन भर चलती रहती है। लक्ष्य प्राप्ति के लिये परिस्थितियों को अनुकूल बनाना या परिस्थितियों के अनुकूल हो जाना ही समायोजन कहलाता है।

समायोजन की प्रक्रिया और भी जटिल हो जाती है जब एक स्थिति के साथ उसकी अन्तर क्रिया दूसरी स्थिति की आवश्यकताओं के साथ संघर्ष में आती है। एक स्थिति प्रसन्नता उत्पन्न कर सकती है जबकि दूसरी स्थिति पीड़ा उत्पन्न करती है। परिणामित तनाव उसकी मानसिकता में व्याकुलता का कारण बन सकता है, दुखदायी शारीरिक रोग लक्षण उत्पन्न कर सकता है अथवा जहाँ तक कि असामान्य व्यवहार की ओर ले जा सकता है।

समायोजन से हमारा तात्पर्य यह है कि समायोजन हम सभी के जीवन में एक आवश्यक प्रक्रिया है। दैनिक जीवन में व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति समायोजन की प्रक्रिया के द्वारा ही करता रहता है। व्यक्ति अपने समंजन की क्षमता में अन्य प्राणियों की तुलना में वह बेजोड़ है।

कक्षा की चहारदिवारी में छात्र शिक्षक हो या घर में रहने वाली स्त्री पुरुष अर्थात सभी क्षेत्र के कार्यरत हो, सभी वर्गों के व्यक्ति समायोजन की प्रक्रिया से होकर गुजरते हैं वह स्वयं को संमजित करके अपने कार्य क्षेत्र में कड़वाहट की जगह मिठास, तनाव के बजाय तालमेल एवं मानसिक दोष तथा अपनी जिंदगी को बोझ बनाने से रोकते हैं, उसे एक आकर्षक चुनौती के रूप में जीवन को जीने की कला सीख लेते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि समायोजन पर्यावरण के साथ, स्वयं के तालमेल के साथ व्यवहार परिवर्तन का एक कारण है।

अतएव समायोजन को इस प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है :-

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11,S.Iss 06, 2022

1. **मन** के अनुसार समायोजन कोई निश्चित वस्तु न होकर व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली एक सतत प्रक्रिया है तथा इसमें निसंदेह मानव व्यवहार के सभी पक्ष समाहित रहते हैं।

2. **जेम्स सी. कॉलमैन** के अनुसार समायोजन व्यक्ति द्वारा तनाव से निपटने तथा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किए गए प्रयासों का परिणाम है।

3. **बोरिंग, लैंगफेड तथा बोल्र्ड** के अनुसार- समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकता एवं इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों से संतुलन बनाता है ।
4. **एच. सी. स्मिथ** के अनुसार एक अच्छा समायोजन वह है जो यथार्थ पूर्णता के साथ-साथ व्यक्ति को संतोष प्रदान करता है। एवं चिंताओं जिनको उसे सहन करना पड़ता है। यह व्यक्ति की कुंठाओ, उसके तनाव स्मिथ की दृष्टि से व्यक्ति को ठीक रूप में संतोष मिलना ही समायोजन का आवश्यक लक्षण है। यदि व्यक्ति अपनी परिस्थितियों से संतुष्ट नहीं है या वह अपने अंदर से आंदोलित महसूस करता है तो उसे हम संमजित नहीं कह सकते हैं।

समायोजन प्रतिपल स्वयं के साथ तथा वातावरण के साथ व्यवस्थित ढंग से प्रतिक्रिया करने का प्रतिफल है।

समायोजन के प्रकार –

समायोजन अलग-अलग प्रकार का होता है। समायोजन मनुष्य की बौद्धिक क्षमता एवं व्यक्तित्व पर निर्भर रहता है तथा इसकी प्रक्रिया व्यक्तिक प्रकार की होती है। मुख्य रूप से समायोजन के निम्नलिखित प्रकार हैं-

- व्यावहारिक समायोजन
- सामाजिक समायोजन
- परिवारिक समायोजन
- शारीरिक समायोजन
- शैक्षिक समायोजन

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11,S.Iss 06, 2022

माध्यमिक स्तर –

वह विद्यालय जिन्हें केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं उत्तर प्रदेश शिक्षा परिषद से मान्यता प्राप्त है। वर्तमान प्रणाली में माध्यमिक स्तर को दो भागों में विभाजित किया गया है:-

1. माध्यमिक स्तर
2. उच्चतर स्तर

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए समायोजन की उपयोगिता :-

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए समायोजन विद्यालय के वातावरण से है। विद्यालय बालक के समायोजन को मुख्य रूप से प्रभावित करता है, जिसमें विद्यालय का वातावरण, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियां, परीक्षा प्रणाली, साथ ही छात्र-छात्राएं, अध्यापक का व्यवहार इत्यादि बालकों के समायोजन के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग प्रकार से प्रभावित करते है। विद्यालय में भय, आतंक एवं अवरुद्ध वातावरण होने से, पाठ्यक्रम के अत्याधिक अधिक बोझिल होने, स्वतंत्र शिक्षण अधिगम परिस्थिति न होने एवं शिक्षक के सहानुभूति पूर्ण व सहयोगात्मक व्यवहार न होने से विद्यार्थी अपना समायोजन सफलतापूर्वक नहीं कर पाते है। विद्यालय का अच्छा वातावरण ही समायोजन एवं शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को संतुलित रख पाता है। बालकों के प्रति अध्यापकों का उत्तम व्यवहार ही उनके मानसिक स्वास्थ्य को उन्नत करता है। विद्यार्थियों की रुचि, आवश्यकता तथा परिस्थितियों के अनुरूप लचीले पाठ्यक्रम ही उनका समायोजन करने में सहायक होते है। शैक्षिक वातावरण में छात्रों को कठोर अनुशासन एवं दंड देने की प्रवृत्ति से हटकर एक स्नेह पूर्ण एवं सहयोगात्मक परिवेश बनाने से विद्यार्थियों में स्वस्थ शैक्षिक समायोजन का विकास होता है ।

समायोजित व्यक्ति की संज्ञानात्मक, एवं समन्वित ढंग से विकास होता है। भावात्मक एवं क्रियात्मक प्रतिक्रियाओं का संतुलित विद्यार्थी अपने जीवन के लक्ष्य एवं उद्देश्यों को प्राथमिकता की दृष्टि से क्रमबद्ध ढंग से अपने व्यक्तित्व को विकसित करते हैं। समायोजित व्यक्ति अपने नए भौतिक परिवेश, अन्य व्यक्तियों के विचार, परेशानी एवं समस्याओं को भली-भांति समझ कर उनके साथ उचित समायोजन कर लेते है। सहयोगी विद्यार्थियों के कार्यों में रुचि रखना एवं अन्य लोगों के साथ उत्साह पूर्वक संबंध बनाने की योग्यता मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्तियों की प्रमुख पहचान है। वह विद्यार्थी जो संवेगात्मक रूप से परिपक्व हो अर्थात वह अपने संवेग पर उचित नियंत्रण रखता हो वह समाज में भी एक आदर्श के रूप में जाना जाता है। सूसमायोजित विद्यार्थी में आत्मविश्वास की भावना प्रबल होती है, उन्हें यह विश्वास होता है कि वह विभिन्न प्रकार के कार्यों को उचित ढंग से सफलतापूर्वक रूप से कर सकते हैं।

निष्कर्ष –

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए समायोजन की उपयोगिता के विषय में प्रस्तुत प्रपत्र में उल्लेख किया गया है। अतः कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक पक्षों के अलावा उनके अन्य पक्ष संवेगात्मक, भावात्मक, सामाजिक, एवं शैक्षिक समायोजन में समस्त रूप से क्रियाशील होते हैं तो वह अच्छे परिणाम को प्रस्तुत करते है | समायोजन के द्वारा ही छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन आता है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876

Research paper© 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal Volume 11,S.Iss 06, 2022

अतः इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि समायोजन बिना सफल जीवन की परिकल्पना भी करना व्यर्थ है। छात्र से लेकर समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों के लिए समय अति महत्वपूर्ण होता है, अर्थात समय का सदुपयोग करने के लिए उसे आवश्यकताओं में समायोजित करना होगा। किस आवश्यकता के लिए कितना समय देना है, यह उपयोगिता के दृष्टिकोण से समय को समायोजित करना आवश्यक होता है। इस प्रकार विद्यार्थियों के लिए समायोजन की उपयोगिता का विशेष महत्व है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

• एन. सी. टी. ई. 2009 अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा

• पाठक आर. पी.2011 उच्च शिक्षा मनोविज्ञान पीयरसन पब्लिकेशन नई दिल्ली

• पांडे, के. पी. 2012 प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान, पीयरसन पब्लिकेशन नई दिल्ली

• एन. सी. टी. ई. रेगुलेशन 2014

. अग्रवाल, संध्या (2008) शिक्षा मनोविज्ञान, अनु प्रकाशन जयपुर

. **सिंह रामपाल एवं ओ. पी. शर्मा (2002).** शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।